Date – 28/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. -II (Hons.)

Topic – Concept of Attributes : Spinoza

Scanned with CamScanner

## गुण (Attributes)

स्पिनोजा 'गुण' को परिभाषित करते हुए कहते हैं- "गुण वे धर्म हैं जिन्हें बुद्धि द्रव्य का सार समझती है।" (Attribute is that which the intellect apprehends as constituting the essence of substance)

स्पिनोजा द्वारा दी गई गुण की परिभाषा के दो अर्थ लगाए जाते हैं -

(i) हीगल एवं जर्डमान : ये दोनों विचारक स्पिनोजा द्वारा दी गई गुण की परिभाषा के "बुद्धि समझती है" शब्दों पर जोर देकर आगे बढ़ते हैं। इस स्थिति में गुण आत्माश्रयी हो जाते हैं। वे द्रव्य के वास्तविक गुण न होकर बुद्धि द्वारा आरोपित गुण हो जाते हैं।

(ii) कुनो फिशर एवं फ्रैंक थिली : इनके अनुसार गुण द्रव्य के वास्तविक सार हैं। गुण वस्तुतः ईश्वर के स्वरूप हैं, उसके वास्तविक एवं तात्विक धर्म हैं।

हेनरी वोल्फ के अनुसार गुण द्रव्य का पक्ष (Aspect) है। द्रव्य के अनेक पक्ष हैं और प्रत्येक पक्ष में उसकी पूर्णता अभिव्यक्त होती है। यद्यपि द्रव्य के अनेक पक्ष हैं परन्तु मानव-बुद्धि उनमें से केवल दो ही ग्रहण कर पाती है। वे दो गुण हैं -

(i) चैतन्य (Thought) (ii) विस्तार (Extension)

Scanned with CamScanner

यद्यपि चैतन्य और विस्तार परस्पर भिन्न हैं, परन्तु वे परस्पर विरोधी नहीं हैं। वे एक ही द्रव्य के दो समानान्तर गुण हैं और इसी कारण उनमें संगतता भी पाई जाती है। जहाँ विस्तार होगा वहाँ तदनुरूप चैतन्य भी होगा और जहाँ चैतन्य होगा वहाँ विस्तार भी होगा। जगत की प्रत्येक वस्तु जड़ की दृष्टि से विस्तारवान है और विचार की दृष्टि से चैतन्यपूर्ण। ये दोनों एक ही द्रव्य के दो अविरोध्य पक्ष हैं। दोनों का उद्गम् स्थल एक है। एक ही उद्गम् से निकलने के कारण ये दोनों धाराएँ बिना किसी विरोध के समानान्तर रूप से प्रवाहित हो रही हैं। स्पिनोजा का यह सिद्धान्त समानान्तरवाद (Parallelism) कहलाता है। यह समानान्तरवाद मन और शरीर सम्बन्ध की एक नवीन व्याख्या प्रस्तुत करता है।

Scanned with CamScanner